

सुजान प्यारे ( ५७ )

चेट पूर्णिमा आई है साई साहिब की मंगल वाधाई है  
वाधाई है खुशियां घर घर छाई है।

प्रेम बसंत जी कृपा बरिसे भारत भूमि मोद में हर्षे  
भक्ति के खेत सरसाए हैं साई साहिब॥

मात पिता के सुकृत फले हैं साई कमल जांके गोद खिले  
हैं

देवों ने दुदंभी बजाई है साई साहिब॥

नर नारी सब नाचें गावें प्रेम मगन हो हर्ष बढ़ावे  
मानो रंक निधि पाई है साई साहिब॥

त्रिविधि समीर बहे सुखकारी रंग बिरंगी फूली फुलवारी  
मधुपों ने गूंज मचाई है साई साहिब॥

कोकिल कूंजे मोरवा नाचै कीर कपोत भी रस रंग राचे  
तरु बेली हुलसाई है साई साहिब॥

चन्द्र वदन सुकुमार सलोनो अस बालक कभी हुए न होने  
सन्त रूप में कुंवर कन्हाई है साई साहिब॥

श्री खण्डि चंद्र सुजान प्यारे गरीबि अमड़ि के प्राण पियारे  
जोड़ी युगल मन भाई है साई साहिब॥